# रमलसार

رمل سار

## प्रश्नावली

जिस में

काष्ठ के पाँसे के द्वारा शुभाशुभ प्रश्न बिचार

रचित हैं

सर्व विद्यानुरागियों और अभिलाषियों

के निमित्त शुद्धता पूर्व्वक

चौथी बार



लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के छापेखाने में छपा॥

अप्रैल

सन् १८८१ ईसवी

## विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् अप्रैल सन् १९०१ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचनेके लिये तय्यार हैं वह इस फ़िहरिस्त में लिखी है और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर लिखा है परन्तु ब्योपारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको व्यापार की इच्छा हो वह छापेखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़त भेजकर क़ीमत का निर्णय करलें

| नाम किताब | नाम किताब | नाम किताब |
|---|---|---|
| क़िस्सा वग़ैरह | राबिन्सन का इतिहास | मथुरा सभा |
| नानार्थ नौ संग्रहावली | संस्कृत की पुस्तकें | ज्योतिष संस्कृत |
| ब्रह्मसार | लघुकौमुदी | मुहूर्त्त गणपति |
| शिवसिंह सरोज | सिद्धान्त चन्द्रिका | मुहूर्त्त चक्र दीपिका |
| भक्तमाल | अमरकोष तीनों काण्ड | मुहूर्त्त चिन्तामणि सटी० |
| इन्द्रसभा | सटीक | मुहूर्त्त मार्त्तण्ड सटीक |
| विक्रम बिलास | पञ्च महा यज्ञ | मुहूर्त्त दीपक |
| बैताल पचीसी | निर्णयसिन्धु | बृहज्जातक सटीक |
| सिंहासन बत्तीसी | संग्रह शिरोमणि | जातका लंकार सटीक |
| पद्मावती खण्ड | भगवद्गीता सटीक | जातका भरण |
| शुक बहत्तरी | दुर्गा पाठ सटीक बम्बू० | होरा मकरन्द |
| चहार दरवेश | बिष्णु भागवत | जातक चन्द्रिका |
| क़िस्सा हातमताई | भविष्योत्तर पुराण | जातका लंकार |
| अपूर्व्व कथा | अपराध भंजन स्तोत्र | दैवज्ञा भरण |
| क़िस्सा गुलसनोबर | कायस्थ धर्म्म निरूपण | ज्ञान स्वरोदय |
| सहस्र रजनी चरित्र | तथा छोटा | इन्द्रजाल |

# भूमिका

इस रमल सार प्रश्नावली के देखने की यह रीति है कि एक पासा काठ का बनवा ले और उसमें संख्या के एक से लेकर चार तक अंक लिख १,२,३,४, और पहिले प्रश्न पूछनेवाला अपने मनमें विचारले जिस मनोरथ के लिये डाले तब तीन बार पासे को फेंके जब उसमें जो अंक तीन बारमें पड़ें उन अंकों को क्रमसे जोड़ ले जैसा प्रश्न का उत्तर आवे उसको समझ ले ॥ इति ॥

श्रीगणेशायनमः

# अथ रमलसार प्रश्नावली

१११ अहो पूछनहार पुरुष शकुन उत्तमहै तुम्हारा कार्य्य सिद्ध होगा सब कामना सिद्ध होगी और इस ग्राम में ही अर्थ पावेगा और तुमको व्योपार में लाभ होगा यही चित्त में चढ़ेगा परंतु श्री गुरुदेवकी पूजा करना अवश्य कार्य्य होगा ॥ ११२॥ मध्यम इस काम के करने में लाभ नहीं और चिन्ता बहुत होगी मत करना जो सपने में अशुभ देखा तो व्योपार में लाभ नहोगा इस काम को छोड़ और कुछ करना ॥.

११३ उत्तम तुमको ठिकाना अच्छा मिलेगा और चिन्ता दूर होगी विघ्न मिटेगा सुख होगा और कल्याण मंगल होगा और बड़ाई सुनोगे जो गवन करोगे तो सिद्ध होगा ये काम अवश्य करना चाहिये ॥ ११४ उत्तम तुमको लाभ होगा और कुल की वृद्धि होगी सुख सम्पत्ति मिलेगी और मित्र से लाभ होगा कुलदेव की पूजा करना ॥ १२१ ॥ मध्यम पहिले तो तुमको लाभ है पीछे जहां गवन करोगे तहां मनमान पाओगे पीछे तुमको कोई चिन्ता होगी भाई बंधु की ओर ते इस से श्री शनिश्चर की पूजा करना जिस से तुम्हारी चिन्ता सब दूर हो जायगी ॥ १२२ ॥ उत्तम तुम्हारे घर में लाभ होगा इष्ट के योग से पावोगे और एक महीना के आदि अन्त में तुमको कल्याण प्राप्त होगा और मनो कामना फलेगी श्री भगवान की पूजा करना ॥ १२३ ॥ उत्तम इस काम के करने में तुमको सब काम की सिद्धि होगी कुटुम्ब की वृद्धि और स्त्री और धन लाभ होगा इस बात में सन्देह नहीं अवश्य तुम को चिन्ता धन की है सो कुछ काल में मिट जायगी १२४ उत्तम तुम धन संतान पावोगे जो कोई वस्तु भली या बुरी मिले तो लेना मन में कुछ चिंता मत करना और व्योपार में तुमको अति लाभ है शनिश्चर

देवता की पूजा अवश्य करना चिन्ता सब दूर हो ।
जायगी ॥ २३१॥ उत्तम सब बात भली होगी ॥ और
राज्य का काम मिलेगा और पुत्र अर्थात् धन स्थान
पावोगे जो कोई वस्तु गई होगी सो मिलेगी श्री ।
परमेश्वर जी का पूजन करना सब कामना सुफल ।
होगी शकुन उत्तम है ॥ २३२॥ उत्तम तुमने चित्त में जो
कार्य्य सोचा है सो मन का मनोरथ फलेगा और बहु-
त हर्ष होगा मन की चिन्ता सब दूर होगी श्री भग-
वान की पूजा करना लाभ होगा ॥२३३॥ मध्यम ध-
न की हानि होगी अथवा व्योपार करे तामें लाभ न
मिले इस काम को मत करना तुम को अशुभ होगा
सोमवार के दिन श्री महादेव जी की पूजा करना और
इस काम को छोड़ कुछ और काम करना ॥ ः ॥
२३४ उत्तम तुम को घर में लाभ अथवा बड़ाई होगी ।
और जय होगी और राज्य द्वार के द्वार से लेना हो और
पूर्व दिशा में लेना है मन वांछित फल मिलेगा धी-
रज धर श्री कुलदेवी की पूजा करो जिस से तुम को
लाभ होगा ॥ २४१॥ उत्तम तुम को व्योपार में लाभ है
और कपड़े के व्योपार में अति लाभ होगा और व्यो-
पार में ही तुम को लेना है और सब दुख दर्द तुम्हारा ।
दूर होगा और मंगलीक वस्त्र मिलेगा अथवा साल

दिन पीछे तुमको अवश्य लाभ होगा ॥२४२॥ उत्तम तुम्हारा भाई बन्धु मित्रों से मिलाप होगा और चिन्ता मिटेगी वस्तु हाथ आवेगी और राजा के घर से लाभ होगा और सकल कामना फलेगी ॥२४३॥ उत्तम तुम्हारी मनो कामना सिद्ध होगी और धन धान्य की तुम को चिन्ता है सो इसका फल मिलेगा और चिंता दूर होगी कल्याण और पुत्र का लाभ पावोगे और परदेश के ग्राम में से मिलेगी जो तुम्हें स्वप्न में ग्राम जाना मालूम होतो अति उत्तम है ॥२४४॥ उत्तम तुम्हारी सकल कामना सिद्ध होगी और धन धान्य की तुमको चिंता है उसका फल मिलेगा और स्वप्न में देवी जी के दर्शन होतो शुभ है इस बात से सन्देह मत करना ॥२२१॥ उत्तम तुम को फल लाभ दायक है और कुछ धर्म करना जिस्से तुम्हारी सब चिन्ता दूर होगी और धन धान्य सुख मिलेगा अरु स्वप्न में अच्छी बात देखो तो बुरी अरु फूलन माला अति उत्तम सुखदाई है ॥२२२॥ उत्तम तुम को अर्थ सिद्ध और कुल में वृद्धता होगी और मनोर्थ सिद्ध होगा जो तुम्हारे चित्त में परदेश जाने की है तो सिद्ध करो काम न तुम्हारी सब फलेगी ॥२२३॥ मध्यम तुम्हारे मन में स्त्री अथवा धन की चिन्ता है सो लह मास के आदि

अन्त में फल मिलेगा और भाई बन्धु से मिलाप होगा और माता पिता से पूछकर काम करना और कुल देवता का ध्यान ब्राह्मण भोजन कराना॥२२५॥ उत्तम तुम्हारा कल्याण होगा और गई वस्तु मिलेगी तुम चिंता मत करो तुमको धन धान्य की चिन्ता है सब चिन्ता दूर होगी और लाभ होगा परंतु शनिश्चर जी की पूजा करनी उत्तम है॥ २२१॥ उत्तम तुम को तीन वर्ष से चिन्ता अर्थात दुःख का क्लेश है सो दूर होगा और लाभ होगी तुम चिन्ता मत करो शकुन उत्तम है २२२ मध्यम तुम्हारे घर में विरोध रहता है और स्त्री से प्रीति कम है और मित्र से बोल चाल नहीं है जिस से तुम को क्लेश है सो श्री भगवान और माता पिता की सेवा करना शकुन मध्यम है॥२२३॥ मध्यम तुम को चिन्ता है और आपका माल पराये हाथ में पड़ा है क्योंकि जिस काम को करते हो उस में लाभ नहीं होता है और घर में क्लेश रहता है सो कुछ दिन में लाभ दायक होगा॥२२४॥ मध्यम तुम को पराये घर की फिकर है जिस से चिन्ता बढ़ती है तुम को घर में क्लेश है सो श्री परमेश्वर और नवग्रहों की पूजा करना सब दुख दूर हो जायगा शकुन अच्छा नहीं है॥ २२१॥ उत्तम तुम्हारे घर में

सुख और लाभ होगा एक महीना के आदि अन्त में फल मिलेगा परन्तु स्वप्न में सूखा वृक्ष अथवा सूनो नगर देखो तो बहुत बुरा है ॥ २३२ ॥ मध्यम तुम इस काम को मत करना डर है सुख न मिलेगा तुम्हारे घर में विरोध है और व्योपार में तुम को लाभ नहीं है तुम को घर मीठा है तासे तुम श्री सत्यनारायण जी की पूजा करना लाभ होगा ॥ २३३ ॥ मध्यम इस काम के करने से तुम को चिन्ता होगी। यह काम देर से होगा कुछ और काम करना चिन्ता सब मिट जायगी अपने कुलदेव की पूजा करना इस में कल्याण लाभ होगा ॥ २३४ ॥ सामान्य है तुम्हारे घर में विरोध रहता है और कुटुम्ब में एका नहीं है तुम को चिन्ता है सो डरो मत सब दुःख दूर हो जायगा परन्तु पीपल की पूजा करना बहुत सुख मिलेगा २४१ उत्तम तुम्हारे घर में सुख होगा और सब कामना सिद्ध होगी जो तुम्हारे चित्त में है सो फल मिलेगा कुछ उपाय करो तुम को लाभ होगा ॥ २४२ ॥ मध्यम तुम को घर मीठा है सो तुम सावधान रहो सर्व लाभ कारी है और व्योपार में तुम को लाभ है परन्तु सूर्य्य व्रत धारण करो तिस से तेरे शरीर को सुख मिलेगा ॥ २४३ ॥ उत्तम तुम को व्योपार

में लाभ होगा और मन का सन्देह दूर होगा और सु-
ख लाभ होगा घर में आनन्द लाभ होगा परन्तु कुछ
धर्म विचारो इस से सर्व कामना सिद्ध होगी ॥३१०॥
उत्तम तुम को सुख लाभ है और चिन्ता सब दूर
होगी कल्याण मिलेगा तुम्हारे कोई तिल अथवा
मस्सा हैं जिस से तुम को कल्याण लाभ होगा
उत्तम है ॥३११॥ उत्तम तुम को अच्छे स्थान से
लाभ होगा और चिन्ता सब दूर होगी और माता
पिता की सेवा करो और कुलदेव की पूजा अर्थात
ब्राह्मण भोजन कराना मनो कामना पूरी होगी
३१२ उत्तम तुम्हारी मनो कामना सुफल होगी
और धन धान्य की लाभ अर्थात कुटुम्ब में वृद्धि
होगी जो स्वप्न में गज अश्व देखो तो मंगलीक
भला है ॥३१३॥ सामान्य तुम को धन की इच्छा
है परन्तु तुम्हारे वैरी बहुत हैं तासे चिन्ता अधिक
रहती है तुम्हारी चिन्ता सब दूर होगी परन्तु श्री
भगवान की पूजा करो बहुत लाभ होगा शकुन
सामान्य है ॥३१४॥ उत्तम तुम्हारा कल्याण होगा
और कुछ धर्म्म करो बहुत लाभ कारी है और चिन्ता
मत करना कामना सिद्ध होगी और अर्थ प्राप्त होगा
श्री गणेश जी का पूजन करना शकुन उत्तम है ॥

३२१ मध्यम तुम्हारे घर में लाभ होगा और व्योपार में तुम को सुख होगा और मार्ग में तुम को चोर लगेंगे जिस का डर बहुत होता है एक मास के आदि अन्त में तुम को लाभ होगा और तुम अपने घर में बैठ रहो व्योपार में उपाय करो तो अति लाभ है ॥३२२॥ मध्यम धन का नाश होगा और मन को बहुत चिन्ता उपजेगी और अर्थ न पावोगे इस काम के करने से लाभ नहीं होगी तुम धीर्य्य धरना शकुन मध्यम है ॥३२३॥ उत्तम तुम को अर्थ लाभ सौभाग्य मिलेगा और तुम्हारे वैरी का नाश होगा और धन धान्य की वृद्धि होगी और इष्ट मित्र से लाभ होगी और तुम्हारा दुख नाश होगा परन्तु तुम श्री सत्यनारायण की पूजन करना शकुन तुम को सामान्य है ॥३२४॥ उत्तम तुम को खेती में अर्थात व्योपार में बहुत लाभ होगा और मनोकामना पूर्ण होगी और धन सुख मिलेगा और तुम को मार्ग में भय होगा और चिन्ता दूर होगी परन्तु हनोमान जी का पूजन करना शुभ है ॥३३१॥ जो तुम्हारे मन में चिन्ता है सो सब दूर होगी और लक्ष्मी की प्रीति होगी और कुटुम्ब में वृद्धि होगी और तुम्हारा कार्य्य सिद्ध होगा यह शकुन श्रेष्ठ है ॥

३३२ उत्तम तुम्हारे मन का मनोरथ सिद्ध होगा और शीघ्र ही फलेगा कुछ चिन्ता मत करो और तुम्हारे माता पिता तथा भाई बन्धु इष्ट मित्र से प्रीति वृद्धि होगी और तुम्हारा कल्याण होगा कुछ उपाय विचार शकुन आनन्द के लायक है ॥३३३॥ उत्तम तुम को घर के काम में शुभ होगा और आप की सब चिन्ता मिटैगी और भाई बंधु मित्र से मिलाप होगा और सब चिन्ता अर्थात् दुख नाश होगा और आप के घर में कल्याण लाभ होगा यह शकुन उत्तम है ॥३३४॥ उत्तम तुम को व्यापार में लाभ होगा और सब दुख दूर होगा परंतु श्री परमात्मा का पूजन करना और कुछ धर्म में मन लगावो तुम्हारा मनोरथ सिद्ध होगा यह शकुन उत्तम है ॥

३४१ तुम्हारा सब कार्य मन का चीता सिद्ध होगा और चिन्ता सब दूर होगी कुछ सोच मत करना तुम धीर्य धरो मन वांछित फल प्राप्त होगा और सब से प्रीति लाभ होगी कुटुम्ब में अति सुख होगा यह शकुन उत्तम है ॥३४२॥ उत्तम प्रथम तुम्हारे घर में प्रीति बढ़ैगी और तुम को अति लाभ होगी हिम्मत कर मनो कामना तुम्हारी फलैगी परंतु श्री भगवान की सेवा करना शकुन तुम्हारा

अति श्रेष्ठ उत्तम है ॥ ४४३ ॥ मध्यम तुम को बैरी बहु-
त लागे रहते हैं सावधान रहना चाहिये और तुम को
चिन्ता बहुत होगी और चिन्ता में तुम बहुत घबड़ाना
मत जो काम तुमने विचारा है सो न बनेगा इस काम
में तुम्हें लाभ नहीं है शकुन सामान्य है ॥ ४४४ ॥ उत्तम
इस काम के करने से तुम को बहुत लाभ होगा और
मित्र बन्धु से मिलाप होगा तुम को सुख मिलेगा यह
शकुन लाभ दायक है ॥ ४४१ ॥ उत्तम तुम्हारा मनोर्थ
सिद्ध होगा और चिंता से खेद है सो तुम को धन धा-
न्य की लाभ है श्री परमेश्वर का पूजन करना शकु-
न उत्तम है ॥ ४४२ ॥ तुम को चिन्ता है सो कुछ दिन
में मिट जायगी और तुम्हारी वस्तु दूसरे के हाथ में
है सो धैर्य्य धरना मिलेगी शकुन सामान्य है ॥
४४३ तेरी चिन्ता मिटेगी हिम्मत कठिन है धन उपार-
जन अर्थात् व्योपार कर सब चिन्ता मिटेगी और
कुछ पुराय विचार शकुन उत्तम है ॥ ४४४ ॥ उत्तम
तुम को कुछ चिन्ता है सो एक मास के आदि अन्त
में दूर होगी व्योपार में सुख लाभ मनोर्थ फलेगा
परंतु श्री सत्यनारायण का पूजन करना शकुन
भला है ॥ ४२१ ॥ तुम्हारे मन में परदेश जाने की है
सो जाना मनोर्थ सिद्ध होगा परंतु श्री कुलदेव की

पूजा करना शकुन उत्तम है ॥४२८॥ मध्यम तुम्हारे
मनमें चिन्ता है जो कार्य्य करो तो विचार के करना ।
और कुछ हानि हुई है सो कुछ दिन पीछे लाभ होगी
परंतु श्री सत्तनारायण का पूजन करना सब चिन्ता ।
रोग तुम्हारा दूर होगा शकुन अच्छा नहीं है ॥४२९॥ उ-
त्तम तुमको घरमें लाभ होगा और वैरी का नाश होगा
और सुख सम्पत्ति मिलेगी और कुटुम्ब में फल पुत्र
का लाभ होगा परंतु एक दो एक देवता के मंदिर में
जाओ शकुन तुमको उत्तम है ॥४३०॥ श्याम के
घरमें चिंता अर्थात् रोग बसे हैं सो दिन दशमें सब
दूर होगा और तुमको फल मिलेगा और मनोका-
मना सिद्ध होगी शकुन उत्तम है ॥४३१॥ उत्तम तुम
को लाभ होगी और शरीर की चिन्ता रोग सब दूर
होगा और कोई स्थान की प्राप्ति होगी और मनोर्थ
सब सिद्ध होंगे अर्थात् कहीं जाओ तहां कुशलसे
आवोगे उत्तम है ॥४३२॥ उत्तम तुमको लाभ है और
चिन्ता सब दूर होगी और धन धान्य की लाभ सुख ।
होगा परदेश जाओगे तो सन्मान पावोगे और शकु-
न उत्तम है ॥४३३॥ तुम्हारे मन में चिन्ता है सो काम
मत करना तुमको दुःख होगा धीर्य्य धरो और पुण्य
करो तो नारायण की कृपा होगी शकुन मध्यम है ॥

४४० तुम्हारे शरीर में क्लेश है अथवा भाई बन्धु से अनमिल रहते हो और जो मन में काम विचारा है सो होगा और सर्व कामना पूरी होगी शकुन उत्तम है॥ ४४१ तुम को फल प्राप्त होगा और कोई उपाय कर डरो मत बड़ा लाभ होगा जो तुमने विचारा है सो मनोर्थ सिद्ध होगा शकुन उत्तम है ॥४४२॥ इस काम के करने से तुम को सुख न मिलगा और चिन्ता बहुत है और राज्य का डर है परन्तु इस में लाभ है सहोगी श्री शिव जी के मन्दिर में एक दीपक का प्रकाश कर शकुन तुम को मध्यम है ॥४४३॥ यह काम अशुभ है और इस में चिन्ता होगी और काम बिगड़ होगा सो जो तुम नवग्रह पूजा अथवा धर्म्म करो तो कल्याण लाभ होगा यह शकुन मध्यम है ॥४४४॥ तुम को व्योपार में लाभ होगा और मन में कुछ चिन्ता होगी अर्थात् खेद पावोगे कुछ दिन पीछे तुम को सुखदाई फल मिलेगा और सकल कामना सिद्ध होगी परन्तु श्री राम नाम की गोली बनाकर जल में डालो अथवा जीवों को चुगावो तो महा सुखदाई फल मिलेगा यह शकुन तुम को महा श्रेष्ठ है ॥ इति

| नाम किताब | नाम किताब | नाम किताब |
|---|---|---|
| संस्कृत उर्दू टी· स· | रामायण रामबिलास | योग वाशिष्ठ |
| मनुस्मृति | रामायण तुलसी कृत | आनन्दाऽमृत वर्षि- |
| विष्णु हारीत | रामायण सटीक मय | णी. |
| महिम्न स्तोत्र | मानस दीपिका कोष | **काव्य** |
| संस्कृत भाषा टी· | आदि तथा जिल्दबंधी | सुखसागर |
| अमरकोष | तथा मोटे अक्षरों की | कथासागर |
| याज्ञवल्क्य स्मृति | मय तसवीर व क्षेपक | विश्राम सागर |
| सन्ध्या पद्धति | रामायण तुलसी कृत | प्रेमसागर |
| व्रतार्क | सातों काण्ड | व्रजबिलास बड़ा व |
| भगवद्गीता टी· ह· कृ· | रामायण शब्दार्थ कोष | छोटा |
| भगवद्गीता श्री· गि· | रामायण का इतिहास | कृष्णप्रिया |
| गीत गोविन्द | रामायण मानस दी· | विजय मुक्तावली |
| कथा सत्यनारायण | रामायण कवितावली | अनेकार्थ |
| परमार्थसार | रामायण गीतावली | छन्दोर्णव पिङ्गल |
| शार्ङ्गधर संहिता | रामायण गीतावलीस· | कविकुल कल्पतरु |
| पाराशरी सटीक | विनयपत्रिका बा· मो· | रसराज |
| शीघ्रबोध सटीक | विनयपत्रिका बा· शि· | सतसई मूल तथा स· |
| लघुजातक | **नाटक** | सभा बिलास |
| षट् पञ्चाशिका | प्रबोध चन्द्रोदय | तुलसी शब्दार्थ |
| सामुद्रिक | रामाभिषेक | भजनावली |
| भाषा (इतिहास) | आनन्द रघुनन्दन | प्रेमरत्न |
| महाभारत भाषा छन्द | **वेदान्त** | युगलबिलास |

| नाम किताब | नाम किताब | नाम किताब |
|---|---|---|
| चित्र चन्द्रिका | मुतफ़र्क़ात | कल्पभाष्य |
| बारह मासा बलदेवकृ | शनिश्चर की कथा | दरसी |
| मनोहर लहरी | ज्ञानमाला | अक्षरावली |
| गंगा लहरी | गोपीचन्द भरतरी | स्वयम्बोध |
| यमुना लहरी | कथा श्री गंगा जी | ज्ञान चालीसी |
| जगत् बिनोद | अवध यात्रा | दोहावली तुलसीदास |
| प्रताप बिनोद | भरतरी गीत | बालाबोध |
| गर्ग संहिता | दानलीला व नाग- | विद्यार्थी की प्रथम |
| भजनमाला | लीला | पुस्तक |
| राग | दोहावली रत्नावली | गणित कामधेनु |
| राग प्रकाश | गोकर्ण माहात्म्य | लीलावती |
| राग संग्रह | श्री गोपाल सहस्रनाम | पटवारियों की पुस्तक |
| लावनी | कथा सत्यनारायण | ४ भाग |
| हरिनामरत्नावली | सटीक | स्त्री दर्पण |
| शृंगार बत्तीसी | हनुमान बाहुक | सती बिलास |
| वैद्यक भाषा | जनक पचीसी | सीता बनवास |
| निघण्ट | हरिहर सगुण निर्गुन | सौदागर लीला |
| अमर बिनोद | पदावली | मनमौज चरित्र |
| वैद्य जीवन | बनयात्रा | तुलसी तत्त्व भास्कर |
| औषधि संग्रह कल्प | कायस्थ वर्ण निर्णय | कायस्थ कुल भास्कर |
| वल्ली | सत्यनाम | इति |
| अमृतसागर बड़ा व छोटा | बिहार बिन्द्राबन | |
| वैद्य मनोत्सव | समर बिहार बिन्द्राबन | |